

6) वर दोषाः पुरुषोतेह हातव्या भूतिभिच्छता।
निन्द्या तन्द्या मयं क्रोध आलस्यं दीर्घ सुखता।

अर्थ पुरुषार्थ चाहने वाले व्यक्ति को नीहा, लांछा (न सोने-
न आगने की स्थिति) भय, क्रोध आलस्य तथा दीर्घसुखता
- (कोई कार्य को आलस्यपूर्वक देर से करना) इन दस दोषों
का परित्याग कर देना चाहिए।

7) सत्येन रम्यते धर्मी विद्याभोगेन रम्यते।
भूजया रम्यते रूपं कुले वृतेन रम्यते॥

अर्थ सत्य से धर्म की रक्षा होती है। भोग से विद्या की रक्षा
होती है। भववन से रूप की रक्षा होती है तथा आचरण
से कुल की रक्षा होती है।

8) अनुलभा पुरुषा राजन् स्वतः प्रियवादिनः।
अप्रियमस्तु परमस्तु वक्ता श्रोता च दुर्लभागा।

अर्थ:- हे राजन् प्रिय वचन बोलने वाले आर्यानी से मिल जाते
हैं किन्तु अप्रिय तथा कलमाशकारी वचन बोलनेवाले या
सुनने वाले दोनों का आभाव हो जाता है।

9) पूजनीया महाभागाः पुत्राश्च गृहशीलमाः।
स्त्रियाः श्रियो गृहस्थोन्मात्तरमादृश्या विवोचनः॥

अर्थ- स्त्रिया पूजनीय होती हैं। धर की लक्ष्मी होती है।
धर की दीपक होती है। अतः इनकी विरोध रूप से रक्षा
करनी चाहिए।

10) अकीर्तिं विनमोहन्ति हन्त नर्था पराक्रमः।
हन्ति नित्यं धमा शोकाभाप्यारो हन्तशाल्यवाम॥

अर्थ विनम से अपमान का नाश होता है। पराक्रम से
अनहोनी का नाश होता है। धमा से शोक का नाश
होता है तथा आचरण से अलक्षणा का नाश होता
है।